श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमद्गोपालार्य महादेशिकैः अनुगृहीतम्

॥ श्री देशिक दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री देशिक दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ध्यानम्

अखिलभुवन रक्षा साधनायावतीर्णे
    कुमति कलिविलासध्वान्त तिग्मांशुजाले।
निरवधिकरुणाब्धौ वेदचूडागुरौ मे
    भवतु परमभक्तिः श्रीनिधौ वेङ्कटेशे ॥ 1 ॥

अस्मद्देशिकतद्गुरून् श्रुतिशिरश्चूडार्यरामानुजौ
    रङ्गेशं रघुपुङ्गवानुजगुरुं श्रीमन् नतार्तिच्छिदम्।
श्रीरामानुज पूर्णयामुनमुनीन् रामारविन्देक्षणौ
    नाथ श्रीशठकोप सैन्यरमणा श्री श्रीपतीन् भावये ॥ 2 ॥

श्रीमत् त्रयीशेखरदेशिकस्य
    नाम्नां सहस्रं गुणतः क्रियातः।
प्रख्यातमख्यातिनिरासि सर्व
    संपत्प्रदं साधुमुदे तनोति ॥ 3 ॥

स्तोत्रारम्भः

वेङ्कटेश कृपालब्धानन्तार्य स्वप्न चिन्तितः।
तोतारम्बागर्भसूर्यसङ्ख्याब्धावासभासुरः ॥ 1 ॥

मधुसूदन रङ्गेश साकूतेक्षित जन्मकः।
नभस्य श्रवण श्रीश तीर्थ वासर जन्मवान् ॥ 2 ॥

दीपप्रकाश निकट सद्भाविर्भाव भासुरः।
श्रीश घण्टावतारत्व ज्ञापकानेक युक्तिमान्॥ 3 ॥

पुण्डरीकाक्षाख्य यज्व पौत्रोऽनन्तार्य पुत्रकः।
आत्रेयवादिहंसाम्बु वाहार्य भगिनीसुतः॥ 4 ॥

स्वस्व कालानन्तगुरु कृतजातक्रियादिकः।
अनन्तार्य कृत श्रीमद्वेङ्कटेशाभिधानकः॥ 5 ॥

वरदाचार्य रामानुजार्योभय कृपेक्षितः।
विश्वामित्रान्वयाब्धीन्दुर्जगत्पुण्य महाफलम्॥ 6 ॥

अनन्तार्याऽऽचार्य रत्न कृतोपनय संस्कृतिः।
वादिहंसाम्बुवाहार्य कृत तापादि संस्कृतिः॥ 7 ॥

अधीत साङ्ग सशिरस्का कृत्रिम सरस्वतिः।
वादिहंसाम्बुवाहार्य सम्प्राप्ताखिल शास्त्रधीः॥ 8 ॥

कणाद तन्त्र पारीण आक्षपादीय गौतमः।
मीमांसा मांसलो व्याकरण तन्त्र पतञ्जलिः॥ 9 ॥

काव्यालङ्कार तत्त्वज्ञः कवितार्किक केसरी।
यतिराज पदाम्भोजद्वन्द्व माध्वी मधुव्रतः॥ 10 ॥

यामुनार्य प्रेममूर्तिः नाथयोगीश नाथवान्।
पराङ्कुश पदासक्तः परकालाङ्घ्रिभक्तिमान्॥ 11 ॥

श्रीपराशरभट्टार्य मेघसूक्त्यम्बु चातकः।
श्रीवत्सचिह्न मिश्रेन्दु सूक्तिज्योत्स्ना चकोरकः॥ 12 ॥

एकान्तवासरसिको द्वयचिन्ता परायणः।
त्रिरागघ्नश्चतुष्पाण्डित्य निर्विण्णैक मानसः॥ 13 ॥

पञ्चप्रकार सन्तुष्टिः षडूर्मि ध्वंस कोविदः।
सप्त व्यसन तत्त्याग तत्स्वीकार विशारदः॥ **14** ॥

अष्टाङ्ग भक्तिधीरष्ट पुष्पीष्टाष्टाङ्ग योगकः।
नवव्याकृति वित् श्री भाष्याद्य पद्य दशार्थवित्॥ **15** ॥

शताभ्यधिक षद्वञ्चाशत् त्रयी मौलि नीतिवित्।
सहस्राधिकृति न्याय विवेचन धुरन्धरः॥ **16** ॥

लक्षकोटि स्वप्रभावांशानर्ह भजन स्थितिः।
कामक्रोधादि निखिल दुरात्म गुण वर्जितः॥ **17** ॥

भारताद्युक्त सकल सदात्म गुणभूषितः।
शास्त्रोक्त सकलाचार्य लक्ष्मावास वरस्थली॥ **18** ॥

श्रीवैष्णवानेक लक्ष्म शोभित स्वर्णविग्रहः।
अगस्त्य शाक प्रमुख सात्त्विकाहार भासुरः॥ **19** ॥

श्रीरामानुज सिद्धान्त स्थापनाचार्य तल्लजः।
देवनायक भद्राशीरर्थाहीन्द्र पुरस्थितः॥ **20** ॥

तार्क्ष्यमन्त्र जपप्रीत तार्क्ष्यदत्त वरप्रियः।
तार्क्ष्य दत्त हयग्रीव मनुप्रीत हयाननः॥ **21** ॥

वागर्थ सिद्धिद हयग्रीव स्तोत्र विधायकः।
हयास्यदत्त लालामृतास्वादन सुपोषितः॥ **22** ॥

तार्क्ष्याज्ञा कृत तार्क्ष्यैक पञ्चाशत् प्रीततार्क्ष्यकः।
देवनायक पञ्चाशत् स्तुति सम्पन्न सत्यवाक्॥ **23** ॥

प्राकृतोक्त्यच्युत शता प्राकृतानन्त संस्तुतिः।
श्रीमत् त्रिमणि सम्प्रोत गाथासर विधायकः॥ **24** ॥

कृत कन्दुकगाथः कुबेराक्षि गीतिकारकः।
घुटिका गीतिकृड्डोला गाथाकृति विशारदः ॥ 25 ॥

उपालम्बाह्वय श्रीमत् गाथाकृति विचक्षणः।
नवरत्न स्रग्विधाता परदर्शन भङ्गकृत् ॥ 26 ॥

पुराणोक्तानेक तत्त्व सृष्टि क्रम निरूपकः।
परकालकृत स्वर्ण बिम्ब स्थेया विरोधदृक् ॥ 27 ॥

स्वतन्त्राष्टोत्तरशतविरोध परिहारवित्।
रघुपुङ्गव गद्यस्रक् कृतगोपालविंशतिः ॥ 28 ॥

गोपपूर्गति भद्राशासन दुष्ट त्रिविक्रमः।
देहलीश स्तुतिप्रीतातिभक्त स्तुत माधवः ॥ 29 ॥

हस्तिशैलेश पञ्चाशत् स्तुत नागाचलेश्वरः।
श्रीचिह्नमालाह्व कृति प्रीत सज्जन मानसः ॥ 30 ॥

द्वादशाख्यान गाथाकृन्न्यासगाथा विधायकः।
अर्थपञ्चक सङ्ग्राहि गाथाकृति विचक्षणः ॥ 31 ॥

वैष्णवावश्यक दिनचर्या क्रम विधायकः।
श्रीहस्तिगिरि माहात्म्य कृत् कृताष्ट भुजाष्टकः ॥ 32 ॥

यथोक्तकारि स्तुतिकृत् कृतकामासिकाष्टकः।
प्रपत्ति दीपिका प्रीत श्रीमद्दीपप्रकाशकः ॥ 33 ॥

प्रपन्नान्वह संभाव्य परमार्थ स्तुतिप्रियः।
सुदर्शनाष्टकोद्धूत श्रेयोबाधक सञ्चयः ॥ 34 ॥

सज्जनर्द्ध्याशासनार्थ षोडशायुध संस्तुतिः।
श्रीमद्वेङ्कट नाथीय मङ्गळाशासनप्रियः ॥ 35 ॥

दयाशतक वीणागीतिप्रीत श्रीनिवासकः।
अयोध्यात्युत्तर दिशा दिव्यदेश गतिप्रियः ॥ **36** ॥

काञ्ची मायि यतिक्षुद्र निरासि स्तम्भलेखनः।
विद्यारण्य चमत्कार दायि वैराग्य पञ्चकः ॥ **37** ॥

कृत सेश्वरमीमांसो मीमांसा पादुकाकृतिः।
भट्टादि सूत्र दुर्व्याख्या निराकरण दक्षिणः ॥ **38** ॥

परिसङ्ख्याख्य विध्यर्थ निरूपण धुरन्धरः।
श्रीरङ्गनाथ सेनेश शासनोत्तंसन प्रियः ॥ **39** ॥

भट्टारकाद्युक्तरीति रङ्गि सेवाक्रमोत्सुकः।
भगवद्ध्यानसोपान वर्तित श्रीशभक्तिकः ॥ **40** ॥

शतदूषण्यपक्रान्त मायि दुर्वादि गर्वकः।
निर्विशेष ब्रह्मशब्द मुख्यामुख्यार्थ भङ्गकृत् ॥ **41** ॥

निर्विशेष ब्रह्म जिज्ञास्यत्व भञ्जन दक्षिणः।
कर्मब्रह्म विचारात्म मीमांसैक्य विधायकः ॥ **42** ॥

विधानानर्ह वाक्यार्थ ज्ञानहेतुत्व भञ्जकः।
उपासना हेतुवेत्ता बाधानुसृति बाधकः ॥ **43** ॥

यज्ञादि ब्रह्म विविदिषा हेतुत्वनिरोधकः।
शाब्दापरोक्षहा धूत पूर्ववृत्त चतुष्टयः ॥ **44** ॥

मायि वादाधिकारघ्नो निर्विशेषात्म भावहा।
निर्विशेष परालम्बि निर्विकल्पक भञ्जनः ॥ **45** ॥

सन्मात्रात्यक्षरोत्था भेद दोषोद्धार कोविदः।
परवेदाप्रमाणत्व दृक् दृश्यत्वानुमानहा ॥ **46** ॥

व्यावर्तमान भावानुमान रोधन तत्परः।
मायिदृक् दृश्य सम्बन्ध निरासैक विचक्षणः॥ **47** ॥

मायि बाह्य प्रकाशानुपपत्ति स्थापन क्षमः।
ब्रह्माश्रयाज्ञान हन्ता ब्रह्मावेद्यत्व भञ्जकः॥ **48** ॥

ज्ञानाजन्म निराकृद्धी निर्विकारत्व मानहा।
धीनानात्व विरोधिघ्नो निर्विशेषानुमानहा॥ **49** ॥

संविदात्मत्व हन्ताऽहमर्थात्मत्व निरूपकः।
ज्ञातृत्वाध्यास हन्ता च साक्षिभञ्जन तत्परः॥ **50** ॥

शास्त्राध्यक्ष विरोधज्ञोऽनृतासाध्य ऋतार्थवित्।
जीवन्मुक्तत्वहा बाध सामानाधिकरण्यहा॥ **51** ॥

संविदद्वैतहा माय्युपदेशानुपपत्तिवित्।
निर्विशेष तिरोधान हन्तात्माद्वैतभञ्जकः॥ **52** ॥

जीवेश्वरैक्य वादघ्नोऽखण्ड वाक्यार्थ बाधकः।
भावरूपाज्ञान रोद्धा जीवाज्ञान विनाशकः॥ **53** ॥

अविद्यानुपपत्तिज्ञो मायाविद्या विभागहा।
कुदृगुन्नीत संसार निवर्तक निवर्तकः॥ **54** ॥

निवृत्त्यनुपपत्तिज्ञोः शब्दावेद्यत्व भञ्जकः।
निष्प्रपञ्च नियोगघ्नो विकल्पामानदा प्रियः॥ **55** ॥

उपबृह्मण वैघट्य युक्तदुर्मत वेदिता।
ऐक्योपदेशान्यथोपपत्त्यसम्भव बाधकः॥ **56** ॥

कुदृक् शास्त्राधिकारघ्नो मुक्ततद्वेद्य तत्त्ववित्।
सगुणागुण वेदान्त व्यवस्था करण क्षमः॥ **57** ॥

ब्रह्मोपादानविन्मायोपादानत्व निरासकः।
कार्याद्यनुपपन्नत्व परिहार विचक्षणः॥ 58॥

ब्रह्मानन्दत्व मतिनिर्विशेषानन्दभञ्जकः।
निर्विशेष ब्रह्मनित्य भाव भञ्जन दक्षिणः॥ 59॥

अद्वितीय श्रुतिव्रात विसंवाद विचारकः।
सत्त्वासत्त्व विवेक्ता जीवैक्य भङ्ग विचक्षणः॥ 60॥

कुदृक्पक्षापशूद्राधिकरण व्याहति प्रियः।
अधिकारि विवेकज्ञो यतिलक्ष्म विवेचकः॥ 61॥

अलेपक मतच्छेत्ता मायि सूत्रार्थ बाधकः।
दशावतार स्तोत्राख्य जगन्मङ्गल कारकः॥ 62॥

स्वप्नभाष्य कृताज्ञप्त वेदचूडा प्रवर्तनः।
यतीन्द्र सप्तत्याख्योपचार श्रुत्यन्त दीपकृत्॥ 63॥

भक्तिप्रकर्ष विहित श्री भू गोदास्तुति प्रियः।
रङ्गेशाज्ञा कृतन्यासतिलकस्तोत्र रत्नकः॥ 64॥

श्रीरङ्गनाथ दत्त श्रीवेदान्ताचार्य नामकः।
रङ्गेश्वरी दत्त सर्व तन्त्र स्वातन्त्र्य भूषितः॥ 65॥

अयत्नकृत वादित्रय खण्डन निबन्धनः।
तत्त्वटीका व्याकृत श्रीमद्भाष्यामृत सागरः॥ 66॥

वाजिशाखा शिखा व्याख्या कृति संप्रीत मानसः।
तात्पर्यचन्द्रिका सुस्थ गीताभाष्य महापथः॥ 67॥

यामुनार्योक्त गीतार्थ सङ्ग्रह त्राणकारकः।
पिष्टपश्वादि गाथोक्ति व्यवस्था करणक्षमः॥ 68॥

प्रध्वंस प्रागभावादि व्यवस्था करणक्षमः।
वैधहिंसाऽहिंसता स्थापन नीतिसुनीतिकः ॥ **69** ॥

मुमुक्षुसूक्त वागादि फलोक्तितति नीतिवित्।
अवाप्त सर्वकामत्व गुणनिर्णय कोविदः ॥ **70** ॥

कैवल्याख्य पुमर्थ स्वरूपानित्यत्व साधकः।
साङ्ग कर्म ज्ञान भक्ति योगावधृति कोविदः ॥ **71** ॥

विभूति विश्वरूपादि विरोध शमनक्षमः।
आत्मानात्म गुणक्षेत्र तज्ज्ञ शोधन दक्षिणः ॥ **72** ॥

पुरुषोत्तम देवासुर विभाग निरुक्तिवित्।
कर्तृ कर्मादि सत्त्वादि गुणाधीन विभागवित् ॥ **73** ॥

एकायनोक्तासूयाविर्भाव व्याकृति दक्षिणः।
उच्चिष्टातन हेत्वार्य भेदनिर्णय कोविदः ॥ **74** ॥

स्त्रीशूद्र भगवत्पूजा तान्त्रिकत्वाभिधायकः।
स्वपराधीनतायत्त शास्त्र वैयर्थ्य बाधकः ॥ **75** ॥

तत्त्वमुक्ताकलापस्रक् कृतसर्वार्थ सिद्धिकः।
कृताधिकरण सारावल्याख्य ग्रन्थशिखामणिः ॥ **76** ॥

सारावली व्याक्रियादि करणादर्श कारकः।
श्रीमन्न्यायपरीशुद्धि विशुद्धीकृत मानसः ॥ **77** ॥

न्यायसिद्धाञ्जनोदञ्चन्मेय याथात्म्य बोधनः।
आक्षपादीय सूत्रार्थ शिक्षाकरण दीक्षितः ॥ **78** ॥

अक्षपाद चमत्कार दायि सूत्र समूहकृत्।
व्यासाक्षपाद सूत्रार्थ विरोध परिहारवित् ॥ **79** ॥

द्रव्याद्रव्य भिदा तत्तल्लक्षणोक्ति विचक्षणः।
त्रैकाल्यानेकसिद्धान्त निरासा सम्भवान्तकः ॥ **80** ॥

रूपादि पञ्चकाधारा भाव वाद निरासकः।
धर्मधर्मित्वापलाप वादध्वान्त दिवाकरः ॥ **81** ॥

पृथिव्यादि चतुर्द्रव्य मात्र पक्ष विभेदिता।
त्रिगुणेन्द्रिय वर्गानध्यक्ष भाव विधायकः ॥ **82** ॥

प्रकृत्यागम गम्यत्व जगन्मूलत्व बोधकः।
चतुर्विंशति संख्याक तत्त्वसृष्टि प्रकारवित् ॥ **83** ॥

साङ्ख्यादि हैतुकोन्नीत सृष्टि तद्धेतु बाधकः।
अष्टीकरण पञ्चीकृति त्रिवृत्कृति भेदवित् ॥ **84** ॥

अन्त्यावयविहाऽन्यूनानुत्कृष्ट परिमाणवित्।
शरीरोत्पत्त्युपादानैक भूतोक्ति निरासकः ॥ **85** ॥

साङ्ख्य सत्कार्य वादघ्नः क्षणिकत्व मतान्तकः।
क्षणोपाधि विशेषज्ञो हेतु साध्यापलापहा ॥ **86** ॥

प्रतिसङ्ख्याप्रतीसङ्ख्या निरोध मतभञ्जकः।
अक्षभूत विकारत्व साधक प्राणनाशनः ॥ **87** ॥

भूतेन्द्रियाप्यायकत्व निर्धारण विचक्षणः।
अन्तःकरण नानात्व बाह्याक्षैक्य निरासकः ॥ **88** ॥

मनोव्यापित्व नित्यत्व हेन्द्रियाणुत्व वेदिता।
चक्षुरादि प्राप्यकारि भावसाधन दक्षिणः ॥ **89** ॥

शब्ददेश गतश्रोत्र कार्यकृत्त्वाभिधायकः।
स्वदेशागत वृत्तित्व निग्राहि श्रोत्रबाधकः ॥ **90** ॥

व्योमाध्यक्षत्व निर्णेता खावकाशोपकारवित्।
आकाशावरणाभाव मात्रभाव विभञ्जकः॥ **91**॥

आकाश नित्यत्व विभुभाव वाद विनाशकः।
दिग्वस्तु साधकच्छेदी दिग्व्योमाभेद साधकः॥ **92**॥

राजसाख्य महत्तत्त्वाभिन्न प्राण विभञ्जनः।
प्राणाक्षत्वा वायुभाव वादनिह्नव दक्षिणः॥ **93**॥

वैश्वानर स्वरूपादि निरूपण विचक्षणः।
तेजो धर्म प्रभातेजो भावसाधन तत्परः॥ **94**॥

प्रभा दीपाद्यवयव भावाभाव विधायकः।
प्रभाविषय भाष्योक्ति विरोधि शमनक्षमः॥ **95**॥

स्थिरास्थिराख्य तेजो विभागज्ञान विचक्षणः।
तम आलोक विरहत्वाभाव पृथिवीत्ववित्॥ **96**॥

पृथ्वीपतन पृथ्वीभ्रमण वाद विनाशकः।
कालस्वरूप केशान्य भावज्ञान धुरन्धरः॥ **97**॥

कालानुत्पत्त्यक्षगम्य भावस्थापन तत्परः।
कालसर्व व्यापकत्व सर्वसाधकताप्रियः॥ **98**॥

आत्माङ्ग मानसाक्षज्ञानादिभेद प्रसाधकः।
आत्मप्रत्यक्त्व कर्तृत्व स्वप्रकाशत्व साधकः॥ **99**॥

यत्नवैफल्य हर्तौपाधिक जीवेश भेदहा।
स्वाभाविकेश जीवात्म भेदाभेद मतान्तकृत्॥ **100**॥

एकतन्वेक जीवात्म मात्रपक्ष विदारणः।
ब्रह्म प्रतिच्छन्द जीववादभञ्जन दक्षिणः॥ **101**॥

चतुर्विधात्मानित्यत्व वादप्राण विनाशनः।
जीवात्मानित्यत्व विभुवादभञ्जन तत्परः॥ **102**॥

जीवैककाल नैकाङ्गाधिष्टातृत्वाभिधायकः।
जीव व्यापित्वोपपत्तिहा जीवाणुत्व साधकः॥ **103**॥

देहतुल्य परीमाण जीववाद विनाशकः।
नित्यसंसारि सदसत्भावस्थापन तत्परः॥ **104**॥

मोक्षोपाय सुदुर्ज्ञान भाववाद विभञ्जनः।
अपवर्गार्थि सद्धेतु विद्या नानाविभागवित्॥ **105**॥

क्रिया विद्योपकारित्व प्रकारज्ञान कोविदः।
क्रियाविद्या कर्तृ संस्कारत्व वाद विनाशकः॥ **106**॥

सर्वाश्रमिब्रह्मविद्याधिक्रिया स्थापन क्षमः।
कर्मविद्याश्रमाङ्गत्व नित्यत्वादि विभागवित्॥ **107**॥

प्रवृत्त्याख्य निवृत्त्याख्य कर्मभेद स्वरूपवित्।
त्रैवर्णिकाधिकरण सर्वाधिकार भेददृक्॥ **108**॥

तत्त्वमस्यादि भुवन बाधकत्व विनाशकः।
जगन्निवर्तक ज्ञान निवर्तक निवारकः॥ **109**॥

जगन्निवर्तक ज्ञान वेद्याभाव विधायकः।
जगन्निवर्तक ज्ञानाधाराभाव विधायकः॥ **110**॥

ब्रह्मविद्या पापनाश कारणत्वोपपत्तिवित्।
विद्यानाश्य त्रिवर्गादि सुकृतोक्ति विचारकः॥ **111**॥

अश्लेषोत्तर काम्यार्थ पुण्यसम्भव वेदिता।
विरजोत्तर तीरान्त त्यक्त दुर्वासनोक्तिमान्॥ **112**॥

मुक्तबुद्धि विकासोत्तर सीमाभाव साधकः।
मुक्ताद्यैच्छिक देहादि योगवर्णन तत्परः॥ **113** ॥

मुक्ताधीच्छा विघाताभाव स्थापन विचक्षणः।
निर्दुःख मुक्तानुभव वेदी नित्याख्य सूरिवित्॥ **114** ॥

देवतान्तर तादात्म्य मुक्तिवाद तमोनुदः।
मतान्तरस्थ सायुज्य शब्दार्थानुपपत्तिवित्॥ **115** ॥

मुक्तात्म पुनरावृत्ति प्रसङ्ग परिहारकः।
वैशेषिकादि पाषाण तुल्य मोक्षोक्ति वारकः॥ **116** ॥

सांख्याभिमत संसार मोक्षपक्ष निवारकः।
मतान्तरस्थाभिमत मोक्षवैविद्य वारकः॥ **117** ॥

ईशवेदैक गम्यत्व वेदाबाध्यत्व साधकः।
उपदेशानुमानेशानुमान दमन क्षमः॥ **118** ॥

शास्त्रयोनित्व साङ्ख्यादि कृतिद्वय विरोधहा।
निमित्ततोपादानत्व द्वयैकाधार वेदिता॥ **119** ॥

सूक्ष्म जीवाचिद्विशिष्टे शोभादानत्व साधकः।
मतान्तरस्थ ब्रह्मोपादानत्वोक्ति निवारकः॥ **120** ॥

जीवाचिदीश विकृतिमत् ब्रह्मोक्त्यपनोदनः।
सर्वानुवृत्त सन्मात्र ब्रह्मत्वोक्ति विभञ्जकः॥ **121** ॥

जीवादि परिणामीश जैनगन्धि मतान्तकृत्।
ब्रह्मोपादिक जीवत्व भास्करोक्त्यपहासकः॥ **122** ॥

अविद्यासहित ब्रह्म विवर्तोक्त्युपरोधकः।
मतान्तरस्थाविद्यावलोकनानुपपत्ति दृक्॥ **123** ॥

ब्रह्मज्ञानानुमाश्रौत पादोदाहरण क्षमः।
मायादिपद सद्ब्रह्म दोषज्ञापगतापहः ॥ **124** ॥

अविद्या साधकाज्ञान कार्यमिथ्यात्व साधकः।
कार्योपादान सादृश्य नियमोक्ति विभञ्जकः ॥ **125** ॥

जगन्मिथ्यात्वानुमान बहुव्याहति बोधकः।
अनित्य मिथ्याभाव प्रक्लृप्ति भङ्ग विधायकः ॥ **126** ॥

भेदाध्यक्षा विरुद्धार्थनिषेध श्रुति बोधकः।
परोक्षबाध्यता योग्या योग्य प्रत्यक्षवेदिता ॥ **127** ॥

मायि शास्त्राध्यक्षमूल दोष साम्योपपादकः।
तुल्यदोष प्रमाणान्योन्य संबाध गतापहः ॥ **128** ॥

शास्त्रैक वेद्यानध्यक्ष नानाभेदोपपादकः।
मायि बौद्धादि साम्यापादन निर्वहण क्षमः ॥ **129** ॥

मायि पक्षानेक बाधक विकल्पाभिधायकः।
पर शास्त्रानुपपत्ति परिहार विचक्षणः ॥ **130** ॥

ईश देहादि पञ्चापाकृतिवाद निरासकः।
देहादि विग्रहाभाव वादव्रात निरासकः ॥ **131** ॥

व्यूहादि पञ्चरूपेश पूर्णषाड्गुण्य वेदिता।
ईशव्यूह विशेषाभिमानित्व परिहारकः ॥ **132** ॥

ईशात्माचार्य शिष्यत्वाभिनीति फल सारवित्।
ईश चित्रानेक वृत्तान्त विशेषादि तत्त्ववित् ॥ **133** ॥

ईश सर्वज्ञ भावानुपपत्ति विनिवारकः।
सर्वेश सर्वशक्तित्व स्वेच्छावत्वाभिधायकः ॥ **134** ॥

धीस्वभास्यत्व नित्यत्व द्रव्यत्व स्थापन क्षमः।
बुद्ध्यवेद्यत्व नित्यानुमेयत्व मतभञ्जकः॥ **135** ॥

प्रमाविपर्ययत्वापरतर्कोह स्वरूपवित्।
प्रमाण लक्षणज्ञस्सत् ख्यात्यर्थ ख्यातिबाधकः॥ **136** ॥

अन्यथाख्याति सन्त्याग स्वीकार द्वय साधकः।
सन्देह याथार्थ्यवेत्ताऽनिर्वाच्यख्याति भङ्गकृत्॥ **137** ॥

अनिर्वच स्वरूपादि रजतोत्पत्ति भञ्जकः।
बुद्धोक्त निरधिष्टान ख्यातिवाद निरासकः॥ **138** ॥

अनौपाधिक तुच्छख्यातिवाद प्राण नाशकः।
योगाचार प्रहर्ता च ह्यख्यात्यनुपपत्तिहा॥ **139** ॥

आत्माकार ज्ञानहर्ता ह्यात्मख्यात्यपहारकः।
निरालम्बन विज्ञानानुमाभञ्जन दक्षिणः॥ **140** ॥

बाह्यानौपाधिका सत्ख्याति साधन विभञ्जनः।
धीगतार्थोद्भवार्थाकार वाद परिहारकः॥ **141** ॥

हरिद्रा चूर्ण नीत्यर्थ धीयोगोत्थाकृति द्विषत्।
सौगतोक्तानधिष्ठान ख्यातिवाद निरोधकः॥ **142** ॥

अनालम्ब ख्यातिहन्ता स्मृतिज्ञान स्वरूपवित्।
प्रत्यक्ष लक्षणज्ञाता दिव्यार्षाध्यक्ष साधकः॥ **143** ॥

वैशिष्ट्या गोचरज्ञान मतच्छेदन दीक्षितः।
सञ्ज्ञानुविद्ध सर्वार्थ बुद्धिशब्दात्यबाधहा॥ **144** ॥

योगि प्रत्यक्षानुमान दूषणोद्भावनक्षमः।
मानसाध्यक्ष भङ्गज्ञस्सन्निकर्ष स्वरूपवित्॥ **145** ॥

अलौकिकाख्य सम्बन्ध प्रत्यक्ष मत बाधकः।
अनुमानाद्यक्षमान बहिर्भाव विधायकः ॥ **146** ॥

अनुमा मानता लक्ष्मज्ञोऽनुमापादि तर्कहा।
अनुमानत्वापरोत्तार प्रकारविदग्रणीः ॥ **147** ॥

उपाधि लक्षणोपाधिविधूनन विशेषवित्।
व्याप्ति स्वरूप व्याप्तिग्राहक मान विचारकः ॥ **148** ॥

व्याप्ति ग्रह प्रकारज्ञाता व्याप्त्यादि विभागवित्।
केवलान्वय्यनूमान विशेषज्ञान साधकः ॥ **149** ॥

महाविद्या निरासोत्थ विरोध परिहारकः।
केवल व्यतिरेक्याख्यानुमाभञ्जन दक्षिणः ॥ **150** ॥

लक्षणज्ञोऽन्यवाद्युक्त लक्षणार्थ द्वयापहा।
स्वपरार्थानुमाप्राज्ञो न्यायावयव वेदिता ॥ **151** ॥

निग्रहस्थान हेत्वाभास जातिच्छल वेदिता।
वादजल्प वितण्डाज्ञो मानाभास विवेचकः ॥ **152** ॥

अनुमानाध्यक्षबाह्य शब्दमान प्रसाधकः।
आकाङ्क्षा योग्यता शक्ति वाक्यार्थ सहकारिवित् ॥ **153** ॥

पदवाक्य स्वरूपज्ञोऽन्विताभिवदनोत्सुकः।
अभीहितान्वय ज्ञाता विशिष्ट पद शक्तिवित् ॥ **154** ॥

विभक्त्याख्यात धातूपसर्ग तद्धित वेद्यवित्।
समासान्वय कृन्मुख्य प्रत्ययार्थ विशेषवित् ॥ **155** ॥

शाब्दबोधाकार वेत्ता लक्षणापद वृत्तिवित्।
विशेष्य मुख्य वृत्तापृथक्सिद्ध पदशक्तिवित् ॥ **156** ॥

भगवत् सर्व शब्दाभिधेयत्व स्थापन क्षमः।
तत्त्वमस्यादि वाक्यार्थ निरूपण विचक्षणः॥ **157** ॥

शाब्दोक्त शब्द सामानाधिकरण्यार्थ वेदिता।
भ्रमोत्पत्ति प्रमाज्ञप्ति स्वतस्थोद्भावन क्षमः॥ **158** ॥

वेद प्रवाह नित्यत्व वेदेशाजनि तत्त्ववित्।
विध्यर्थ वाद मन्त्रादि तदर्थावधृति क्षमः॥ **159** ॥

भाषामन्त्र व्यवस्थाविन्मन्त्रावान्तर भेदवित्।
अद्रव्यमानवित् सत्त्वासत्त्व शब्दोक्ति बाधकः॥ **160** ॥

जननादि मृषात्वोक्ति मतच्छेदन तत्परः।
द्रव्याद्रव्यानुमेयाद्यक्षभेदाभेदवारकः॥ **161** ॥

भेदबाधक निस्ताराद्रव्येयत्तावतारकः।
रजस्तमस्सत्त्वगुणोपयोगाद्रव्यतोक्तिमान्॥ **162** ॥

सत्त्वाद्यवस्थावैचित्र्यानन्त्य निर्णय कोविदः।
शब्दादि ग्राहकाधार नियमोक्ति विचक्षणः॥ **163** ॥

शब्दादि गुणयुङ्नित्य विभूति व्याकृति क्षमः।
सर्व भूताश्रितध्वाना द्रव्यत्व स्थापन क्षमः॥ **164** ॥

सौगतोक्त ध्वानजैन शब्द पुत्कल वादहा।
वर्ण वेदानित्य नित्यत्व प्रकारावतारकः॥ **165** ॥

अनुष्णाशीत शीतोष्ण स्पर्शाधार विशेषवित्।
भूतपञ्चक वर्णोक्ति निर्वोढा रूपभेदवित्॥ **166** ॥

चित्ररूप मतच्छित्स्नेह गुणान्तर बाधकः।
निराकृत गुरुत्व द्रवत्वाख्यान्य गुणद्वयः॥ **167** ॥

गुरुत्वागम निर्वोढा गुरुत्वाध्यक्ष लिङ्गनुत्।
एकत्व द्वित्व सङ्ख्यादि गुणान्तर निरासकः॥ **168** ॥

परिमाण पृथक्त्वाख्य गुणान्तर निरासकः।
नित्यानित्याख्य संयोग स्थापनैक विचक्षणः॥ **169** ॥

परापर विभक्तत्व गुणत्रय निरासकः।
विषयालम्बिताभेद धीवैषम्यावतारकः॥ **170** ॥

मुक्तबुद्धि जगद्व्याप्ततोपपत्ति निरूपकः।
योगिबुद्धि विनष्टैष्यत् गोचरत्वोपपादकः॥ **171** ॥

अद्रव्य नित्यधी पक्ष विषयित्वादि बाधकः।
धीविकार द्वेषराग सुखदुःख प्रयत्नदृक्॥ **172** ॥

त्यक्त जीवन योन्याख्य यत्नप्राकट्यदर्शनः।
भगवत् प्रीतिकोपान्य धर्माधर्म मतान्तकः॥ **173** ॥

श्येनाग्नीषोम वैषम्य साधनैक विचक्षणः।
मन्त्रस्वार्थ परत्वोक्ति विरोध परिहारवित्॥ **174** ॥

देवतामुख संसिद्ध भगवत्प्रीति साधकः।
संस्कार कर्म भगवत्प्रीत्यर्थत्व प्रसाधकः॥ **175** ॥

अपूर्वविधिवाच्यत्व प्राधान्य बहुदोषवित्।
वक्त्रभिप्राय देवप्रसाद लिङ्गाच्यता सुधीः॥ **176** ॥

संस्काराख्य गुणच्छेत्ता कर्माख्यार्थ स्वरूपवित्।
संस्थानोत्तीर्ण गोत्वादि सामान्यमत भञ्जकः॥ **177** ॥

जातिवादानेकवादि समीरीत निरासकः।
सादृश्यादि पदार्थान्तर क्लृप्ति प्राणनाशनः॥ **178** ॥

अनेक शून्यावयवानुवृत्ति व्यवहारवित्।
विशेष समवायाख्य पदार्थान्तर बाधकः॥ **179** ॥

अभाव भावरूपत्व स्वभावेयत्व बोधकः।
रामानुजीय सिद्धान्त सर्वोत्कृष्टत्व साधकः॥ **180** ॥

सच्चरित्र त्राण सम्यक् त्रात सन्मार्ग सन्ततिः।
खिलाध्यक्ष श्रुति स्थापित चक्राङ्कन संस्कृतिः॥ **181** ॥

स्मृतीतिहास निर्णीत तप्त चक्रादि धारणः।
तप्तमुद्रा निषेधादि वचोनिर्वाह कोविदः॥ **182** ॥

प्रत्यक्षश्रुति रूप प्रमाणबोध्योर्ध्व पुण्ड्रकः।
ऊर्ध्व पुण्ड्र प्रमाण स्मृतीतिहास पुराणवित्॥ **183** ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्राननुष्ठान निमित्तानर्थ साधकः।
सर्ववैदिक कर्माङ्गोर्ध्वपुण्ड्र धृतिकोविदः॥ **184** ॥

भस्म श्रीवैष्णवास्पृश्य भावसाधन दक्षिणः।
ऊर्ध्वपुण्ड्र धृतिद्रव्य विशेषावधृतिक्षमः॥ **185** ॥

अच्छिद्र पुण्ड्रदमनस्तिर्यक्पुण्ड्र निषेधकः।
भगवत्पाद सदृशोर्ध्वपुण्ड्राकृति वेदिता॥ **186** ॥

पुण्ड्र सच्चित्रता वेत्ता पुण्ड्रसङ्ख्या विचारकः।
ऊर्ध्वपुण्ड्र धृति प्रोक्त प्रकार विवृतिक्षमः॥ **187** ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्रानेक मन्त्र व्यवस्थाकरण प्रियः।
वर्णाश्रमादि नियतोर्ध्व पुण्ड्राङ्गुलि वेदिता॥ **188** ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्र स्थानवेत्तोर्ध्वपुण्ड्र ध्येय देववित्।
श्रुतिस्मृत्यादि निर्णीत विष्णु नैवेद्यभोजनः॥ **189** ॥

विष्ण्वर्थान्नाभक्त चक्षुर्दर्शनोत्सारणप्रियः।
भगवद्भुक्त शेषान्नाभक्त दान निषेधकः॥ **190** ॥

अन्यदेव निवेद्यादि भोज्यत्वाभाव साधकः।
अनन्तायुध पक्षीश नैवेद्याद्यत्व साधकः॥ **191** ॥

सेनेश द्वारपालादि नैवेद्याद्यत्व बाधकः।
सेनेश हविरालम्बि पक्षभेद निरूपकः॥ **192** ॥

विभक्त विष्णुनैवेद्य चातुर्विद्योपयोगवित्।
हरिपूजोपयुक्तस्थायि पूजान्तर योगवित्॥ **193** ॥

विष्णु नैवेद्यैक साध्य वैश्वदेव विधिप्रियः।
विष्णु नैवेद्यैक साध्य पितृश्राद्ध क्रियाधिकः॥ **194** ॥

विष्णु नैवेद्यैक साध्य प्राणाग्नि हवनक्रियः।
वैश्वदेवेज्योपयुक्त भोज्यता वाक्य शोधकः॥ **195** ॥

विष्णु नैवेद्य हार्दानिवेद्याशन निषेधकः।
अर्चाहार्दादि रूपाश्य हविरंश विशेषवित्॥ **196** ॥

अन्यप्रयुक्तोपजीवि प्राणाग्नि हवनक्रियः।
शठकोपादि नैवेद्य सार्थप्राणाग्निहोत्रकः॥ **197** ॥

न्यासविंशति संक्षिप्त निक्षेपापेक्षिताखिलः।
संक्षिप्त न्यासविद्याङ्ग श्रीन्यासदशकप्रदः॥ **198** ॥

निक्षेपरक्षाकृन्न्यास निषेध नवकान्तकः।
आनुकूल्याद्यङ्गभेद प्रपत्त्यध्याय भेददृक्॥ **199** ॥

अन्यदेव पराचार्य त्यागपर्यन्त बोधकृत्।
संहिताभेद गम्य न्यासविद्यामनुभेदवित्॥ **200** ॥

न्यास भक्तापचारादि नाश्यत्व व्याकृतिक्षमः।
न्यासमन्त्र द्वयन्यास सर्वाधिकृति शोधकः॥ **201** ॥

पुंसु विद्या न्यासविद्या शेषभाव प्रकारवित्।
सङ्कल्पित गुरूपाया सङ्ग्राह्य लघुवेदिता॥ **202** ॥

श्रीराम चरमश्लोक व्याख्यान करणक्षमः।
श्रुत्यन्त वेदन ग्राह्य भक्ति न्यासोपपादकः॥ **203** ॥

ब्रह्मसूक्ताद्युक्त भक्ति न्यासविद्या द्वयोत्सुकः।
मोक्षार्थाराधनाद्यर्थ न्यासावान्तर भेदवित्॥ **204** ॥

भाष्यकारोक्त गद्यत्रय व्याख्यान विचक्षणः।
गद्यद्वय व्याकृतित्व निरूपण विचक्षणः॥ **205** ॥

गद्य प्रपत्ति प्राधान्य परत्व प्रतिपादकः।
प्रपित्सु पूर्वमध्यैष्यत्कालकर्तव्य बोधकः॥ **206** ॥

शरण्य पूर्वमध्यैष्यत्कालकर्तव्य वेदिता।
लक्ष्मीप्रपत्ति मोक्षार्थ प्रपत्त्यर्थत्व साधकः॥ **207** ॥

कमलानुग्रहैकान्त्य पारम्य त्राणदीक्षितः।
श्रीन्यास पारमैकान्त्य भञ्जकत्व निवारकः॥ **208** ॥

परभक्ति परज्ञान परमप्रेम शोधकः।
न्यास स्वरूप विषयायत्त वैषम्य साधकः॥ **209** ॥

पञ्चायुधावान्तरीय प्रयोजन विचारकः।
पञ्चायुध प्रमाणीय विरोधोत्तार कोविदः॥ **210** ॥

गद्योक्त पितृमात्रादि त्यागनिर्वाह कोविदः।
अकृत्य कृत्याकरणापचारादि विशेषवित्॥ **211** ॥

भक्तापचारवित् पापशक्तिभेद निरूपकः।
रहस्य स्पष्ट भक्तापचारादि परिहारवित्॥ **212** ॥

वर्तमान भविष्यत्काम्य क्षमार्थनयुक्तिवित्।
प्रपन्नबुद्धि पूर्वैनो निष्कृत्युक्त्यविरोधवित्॥ **213** ॥

चतुःश्लोकी भाष्यसूक्त लक्ष्मीशत्वोपपत्तिकः।
लक्ष्मीविषय दुर्वादि विरुद्धोक्ति निवारकः॥ **214** ॥

स्तोत्रभाष्य कृति व्यक्त यामुनाचार्य मानसः।
स्वार्थान्योक्त स्तोत्र सर्व पुरुषार्थत्व साधकः॥ **215** ॥

गुरु तद्गुरु सम्बाध कालप्राचार्यदास्यकृत्।
वैखानसागमाद्युक्त नतिभेद विचारकः॥ **216** ॥

वकुळाभरणाचार्य भावानेकविरोधहा।
अध्यक्षागम सत्सूक्ति निर्णीत जगदीश्वरः॥ **217** ॥

नारायणाद्यनन्यार्थ सञ्ज्ञास्तेतर दैवतः।
पारम्य सूचकानेकानन्यथासिद्ध लिङ्गदृक्॥ **218** ॥

वक्तृसत्त्वाद्यनुगुण सात्त्विकादि पुराणवित्।
सात्त्विकादि प्रवचन सात्त्विकत्व प्रसाधकः॥ **219** ॥

श्रीपाञ्चरात्र रक्षाकृत् पञ्चरात्र प्रमाणवित्।
अस्मार्त संस्क्रियाधीना ब्राह्मण्यापत्ति वारकः॥ **220** ॥

त्रैय्यागमोक्त कर्माधिकारि वैषम्यसाधकः।
एकायनापौरुषेय भावसाधन वेदिता॥ **221** ॥

श्रीपाञ्चरात्र सिद्धान्त भेदलक्षण वेदिता।
चतुर्विधागम ब्रह्म प्राप्तिहेतुत्व साधकः॥ **222** ॥

सिद्धान्त संहितातत्तत्साङ्कर्य परिहारवित्।
स्वान्य सिद्धान्त कर्माधिकाराभाव प्रसाधकः॥ **223** ॥

आगमावान्तरोत्कर्षापकर्षादि विधायकः।
उत्कृष्टस्थ निकृष्टोक्त क्रियाधिकृति बोधकः॥ **224** ॥

वैखानसाख्य तन्त्र प्रमाणत्व विवृतिक्षमः।
वैखानसागमान्योन्य साङ्कर्यासक्तिभञ्जकः॥ **225** ॥

श्रीपाञ्चरात्र सर्वोपजीव्यत्वोक्ति विचक्षणः।
सूत्रान्तर स्थापितार्चा तन्त्र पूजा विधायकः॥ **226** ॥

शैवागमाद्यमान्यत्व संस्थापन विचक्षणः।
प्राक् प्रवृत्त परित्यागोत्कृष्टागम निरोधवित्॥ **227** ॥

सात्त्विकादिविभागाधीनागमामानदापहः।
पूर्वागमोत्कृष्ट मार्ग विधान सुगतिप्रदः॥ **228** ॥

स्वयं व्यक्तादि भवन तारतम्य विधायकः।
देवपूजा मुख्य गौणाधिकारि व्याकृतिक्षमः॥ **229** ॥

देवेज्याष्टाङ्गतोत्कर्ष वर्णनैक विचक्षणः।
प्रयत्नाद्यनपेक्ष स्वतस्सिद्धोत्कर्ष वस्तुदृक्॥ **230** ॥

परमैकान्ति कर्तव्य पञ्चकाल क्रियासुधीः।
भाष्यकाराश्रयीभूत पञ्चकाल प्रकाशकः॥ **231** ॥

वैशेषिक त्रिकालार्चाभिधानाद्यविरोधदृक्।
श्रीपाञ्चरात्र स्मृत्यैककण्ठ्य स्थापनदक्षिणः॥ **232** ॥

व्यास दक्षाद्युक्तधर्म शास्त्रार्थ विवृतिक्षमः।
सर्वक्रियाद्यङ्गभूत हरिस्मरण बोधकः॥ **233** ॥

पाञ्चरात्रोक्त भगवद्ज्ञान नित्यत्व साधकः।
अर्चावतार रहित गृहभोजन दोषवित्॥ **234** ॥

भगवद्ध्यान रहित कालवैयर्थ्य साधकः।
प्राप्त कामार्थ लिप्सा पारमैकान्त्यानुकूल्यदृक्॥ **235** ॥

कैङ्कर्य कालावश्यानुसन्धेयार्थ विशेषवित्।
समयाचार नियमाध्यायोक्तावश्यकत्ववित्॥ **236** ॥

वैष्णव श्री धर्मशास्त्रोदीरितावश्यकत्ववित्।
आरम्भ मन्त्रनिर्णेता सात्त्विकत्याग साधकः॥ **237** ॥

रात्र्यन्तोत्थान समय हरिकीर्तन साधकः।
निद्रा निमित्ताचमनानुकल्पावश्यकत्ववित्॥ **238** ॥

पूर्वक्षपा विरमित योग कार्यत्व वेदिता।
अभियानारम्भकाल वेत्ता निर्वेद कालवित्॥ **239** ॥

निर्वेदफलवित् कार्यकर सात्त्विक धैर्यवित्।
मन्त्राधिकम कुर्वन्योपाय दूषण वेदिता॥ **240** ॥

गुरुध्यानानुकर्तव्य हरिध्यान स्वरूपवित्।
कैङ्कर्यार्थाचार्य विष्णु ध्यानानुध्यान बोधकः॥ **241** ॥

नित्यप्रयोज्य कैङ्कर्य पूरणार्थन मन्त्रवित्।
स्तोत्रादि स्थावश्य कीर्त्य देवदेव्यादि नामवित्॥ **242** ॥

भगवन्मन्त्र तत्काल चोदितोचितजप्यवित्।
पदन्यास मनुज्ञाता पदक्रम मनूक्तिमान्॥ **243** ॥

गतिकालावश्यकार्य केशवाह्वान कीर्तनः।
सन्ध्या स्नानोपकरण ग्रहणैक विचक्षणः॥ **244** ॥

मलमूत्र विसर्गार्त्त देशादि सकलार्थवित्।
शौच सङ्ख्याक्रम द्रव्य कालवैषम्य साधकः॥ 245॥

दन्तधावन काष्ठादि व्यवस्था न्यायतत्परः।
स्नानतीर्थ विशेषज्ञः स्नानभेद विधायकः॥ 246॥

उष्णोदक स्नानकाल व्यवस्था करणक्षमः।
वासोधरण पुण्ड्राङ्ग तर्पणक्रम साधकः॥ 247॥

सन्ध्योपास्तिविशेषज्ञो गायत्री स्थानसारवित्।
गायत्रीजप सङ्ख्यान साधनोत्कर्ष सारवित्॥ 248॥

सन्ध्याकालीन नियम वेत्तोपस्थान कालवित्।
दिगादि नमनासक्त पारमैकान्त्य भङ्गहा॥ 249॥

सन्ध्याकालावश्यकार्य मूलमन्त्र जपोक्तिमान्।
व्याकृताधार शक्त्यादि देवर्षि पितृतर्पणः॥ 250॥

नित्यतर्पण कर्मान्तवासः पीडन साधकः।
ब्रह्मेज्याकालवित् ख्यात तीर्थ मन्त्रोपसंहृतिः॥ 251॥

तीर्थासन्नानन्त सद्म प्रवेशावश्यकत्व वित्।
भगवत्सद्म सन्त्याज्य द्वात्रिंशदपचारकः॥ 252॥

अभ्युक्षणोक्षितगृहो होमकाल विशेषवित्।
परगोग्रास दानर्द्धिरभियान स्वरूपवित्॥ 253॥

उपादानाख्य समय वेत्तोपादान मन्त्रवित्।
हेयोपादेय देवार्थ सुमादि द्रव्य वेदिता॥ 254॥

स्वार्जितारण्य मूल्य क्रीत याचित गुणादिवित्।
सुमनोगत सत्त्वादि कृतोपादानहानघः॥ 255॥

तिथिभेदादि नियत पुष्पभेदादि साधकः।
दिवानिशा देवयाग व्याप्त सून विशेषवित्॥ **256**॥

शास्त्रानुमत शिष्टाग्राह्य पुष्पादि निवारकः।
गृहालयार्चानियत वासः पुष्पादि भेदवित्॥ **257**॥

स्रङ्माला भेददृक् सूत्र ग्रथितादि निषेधकः।
भगवद्याग वर्ज्योपादेयाभरण शोधकः॥ **258**॥

प्राण्यङ्ग सुरभिद्रव्योपयोग व्याकृतिक्षमः।
हेयोपादेय मुकुळ पत्राङ्कुर विचारकः॥ **259**॥

दिनद्वयापर्युषित कुसुमोक्ति विचक्षणः।
भोजराजाद्युक्तकाल पुष्पभेद विचारकः॥ **260**॥

ग्राह्यमूलग्रहीता धूप दीप द्रव्य वेदिता।
दशा विशेषानुमतार्जनोपाय विशेषवित्॥ **261**॥

सर्व प्रतिग्रह व्याप्त मनुनिर्णय कोविदः।
यति पुष्पग्रहोपाय विशदीकरणक्षमः॥ **262**॥

पूजाद्यर्हान्तरात्मीय गुणोपादान साधकः।
भाष्यकारोक्त नित्याख्य ग्रन्थ व्याकरणक्षमः॥ **263**॥

इज्याकाल विशेषज्ञ इज्याप्राधान्य साधकः।
परमैकान्ति शब्दार्थ तन्निबन्धन वेदिता॥ **264**॥

यत्यन्न देवपूजादि महादोष प्रसाधकः।
परमैकान्ति संदृष्टान्यदेव नतिबाधकः॥ **265**॥

कर्मण्यता भावहेतु पाप तच्छान्ति हेतुकृत्।
इज्याधिकार भेदज्ञ इज्यासारार्थ वेदिता॥ **266**॥

स्वाध्यायकाल स्वाध्याय भेदादि कृतिभेददृक्।
स्वाध्याय सार सन्द्रष्टा स्वाध्यायाङ्ग विशेषवित्॥ **267**॥

सायं सन्ध्या होम देव पूजा भोजनकालवित्।
भुजिलोप निमित्त प्राणाग्निहोत्र मनूजपः॥ **268**॥

प्रदोष वर्जित निशा योग्याधीति विशेषवित्।
त्रयोदशी पूर्वरात्रि कार्यमौन विशेषवित्॥ **269**॥

प्रदोषकाल कर्तव्य सन्ध्या सङ्कोच वेदिता।
प्रदोषावश्य वर्ज्याष्टाक्षर मन्त्र जपोक्तिमान्॥ **270**॥

सन्ध्या त्याज्याष्टाक्षरान्य गायत्र्यन्य जपक्रियः।
आशौचकाल सन्त्याज्य गायत्र्यन्य जपक्रियः॥ **271**॥

अध्यायानर्ह विषुवाद्यनुज्ञात जपान्तरः।
मौनक्रिया समायात सच्छिद्रत्व निरासकः॥ **272**॥

प्रदोष नरसिंहान्य हरिदर्शन बाधकः।
प्रदोष कालानुज्ञात स्वगृहार्चावलोकनः॥ **273**॥

मध्यरात्र निषिद्धस्वगृहार्चा पूजनादिकः।
मध्यरात्रोपरागादि कालवर्ज्यार्चनादिकः॥ **274**॥

सर्वकालाभ्यनुज्ञाता स्थानस्थ हरिदर्शनः।
अष्टाङ्ग याग मध्यानुज्ञात स्वाध्याय योगवित्॥ **275**॥

श्रीपराशर शाण्डिल्याद्युक्त योग स्वरूपवित्।
श्रीभाष्यकृत् सम्प्रदाय प्रपन्नजन योगदृक्॥ **276**॥

न्यास गद्याद्यनुगुण विनियोग विधायकः।
अर्चावतार विषय योगौचित्याभिधायकः॥ **277**॥

योगाङ्ग संहृति न्यास स्थानाचमन साधकः।
योगोपकारि करण श्रान्ति हेतु सुषुप्तिमान् ॥ **278** ॥

खट्वादिरूप ब्रह्मादि संपरिष्वङ्ग भावनः।
शास्त्रीय शयनीयादि नियमादि विधायकः ॥ **279** ॥

स्वाराध्य भगवत्पाद सरोजन्यस्त शीर्षकः।
निद्रारम्भच्छेदकार्य माधवध्यान कीर्तनः ॥ **280** ॥

एकादश्यादिलुप्तानु याग सप्ताङ्ग यागदृक्।
द्वादश्यादि प्रभाताधः पारणास्थापन क्षमः ॥ **281** ॥

पारणादिन मध्याह्न सप्ताङ्गेज्या विचारकः।
अनेकेज्या सन्निपात लुप्तोपादान लेशकः ॥ **282** ॥

अशक्त्यवस्था स्वसमानर्त्विगादि कृतेज्यकः।
विधुर व्रति सन्न्यासि वनस्थर्त्विङ्निषेधकः ॥ **283** ॥

सूतकादि दशात्याज्य शुचिकर्तव्यकर्मकः।
मौन शून्याशौच काल कीर्त्य ध्येय हरिप्रियः ॥ **284** ॥

आशौचकाल कर्तव्याभिधानाख्य क्रियापरः।
सर्वक्रिया प्रतिनिधि भगवन्नामकीर्तनः ॥ **285** ॥

रहस्याम्नाय निष्ठाशौच निषेध विधायकः।
ब्रह्मवित्त्वनिमित्ताघ सङ्कोच व्याहति क्षमः ॥ **286** ॥

प्रक्रान्तोत्सव कार्यादि सूतकादि निषेधकः।
आशौचकाल कर्तव्य मानसेज्याविचारकः ॥ **287** ॥

अशौचकाल कर्तव्य सन्ध्योपास्ति प्रकारवित्।
दुष्करत्व परिज्ञान क्षुप्त पुंहर्ष वर्धकः ॥ **288** ॥

भगवद्धर्म सौकर्य विशेष व्याकृति क्षमः।
इज्योपचारवैकल्य दोषादोष विचारकः॥ **289** ॥

सङ्कल्प सूर्योदयाधः कृत पारक्य नाटकः।
सङ्कल्प सूर्योदयाद्यपद्य व्यक्त स्ववैभवः॥ **290** ॥

च्छात्रबद्ध ध्वजोद्भासि दशाशासौधमण्डलः।
श्रीवैकुण्ठ विनोदी सत्कविनाटक लक्ष्मदृक्॥ **291** ॥

शान्त्यैक रसभावज्ञः शृङ्गारादि रसत्वहा।
गौडवैदर्भ पाञ्चाल मालाकार वचोधरः॥ **292** ॥

पात्रीकृत विवेकादि गुणाधिष्ठातृ दैवतः।
सन्धिपञ्चक संवेश नाटकस्थान कोविदः॥ **293** ॥

सर्वसङ्कट विध्वंसि विशङ्कट मनीषिदः।
विंशद्वर्षाधीत सर्व विद्यासन्तति भासुरः॥ **294** ॥

त्रिंशद्वार श्रावित श्रीमच्छारीरक भाष्यकः।
यतीन्द्रार्पित दुर्वादि विजयार्थ पवित्रकः॥ **295** ॥

वातनामा वातदोष व्यवस्थाकरण क्षमः।
सूक्ष्म सूक्ष्मतरात्यन्त सूक्ष्मप्रश्नोत्तर क्षमः॥ **296** ॥

यतीन्द्र ग्रन्थ सुरभि मनस्कपदशेखरः।
शङ्करादि कुदृङ्मूर्ध न्यस्त वामपदोज्वलः॥ **297** ॥

कुदृङ्मूर्ध न्यस्तपाद सुवर्ण कटकोज्ज्वलः।
वैकुण्ठलोक स्त्रीपुंस मिथुनार्थोपपत्ति वित्॥ **298** ॥

स्वशिल्पजित गीर्वाण दैत्यशिल्प चमत्कृतिः।
समाधि साधकस्थान शुभाश्रय निरूपकः॥ **299** ॥

अनात्म गुणकामादि निरासादि प्रकारवित्।
महात्मात्मानात्म गुणचेष्टित ज्ञापन क्षमः ॥ **300** ॥

राघवाभ्युदयोत्कृष्ट यादवाभ्युदय प्रदः।
श्रीसेतु शठकोपादि सेवा सन्तुष्ट मानसः ॥ **301** ॥

चोलदेशीय भगवत्क्षेत्र सेवा रसाकुलः।
हस्तीश सेवाकुलात्मा नरेन्द्र मदसर्पहा ॥ **302** ॥

नरेन्द्र वन्दितस्तार्क्ष्य दण्डकोत्तम दातृधीः।
पुनर्वृषाद्रि रङ्गेश सेवार्थ गमनोत्सुकः ॥ **303** ॥

आश्चर्यावह चारित्र वाजिवक्त्रादि दैवतः।
वरदाचार्य जनको जीविताखिल विष्टपः ॥ **304** ॥

हयास्य पूर्त तीर्थाहर्दृष्ट लज्जित विघ्नकृत्।
रात्रि निर्व्यूढ रङ्गेश पादरक्षासहस्रकः ॥ **305** ॥

पादरक्षा सहस्रोक्त पादुकासेवकाभिदः।
रङ्गेशदत्त कवितार्किक सिंहाभिधानकः ॥ **306** ॥

सम्प्रदाय परीशुद्धि स्थापिताचार्य सत्पथः।
सत्सम्प्रदाय रहित शास्त्रानादर बोधकः ॥ **307** ॥

सच्छास्त्र मूलान्य सम्प्रदायानादर बोधकः।
कल्यादि निगमान्त प्रवर्तकावधृति क्षमः ॥ **308** ॥

शठकोपाचार्यभाव स्थापनैक विचक्षणः।
अनुकूलाचार्यवंश्य विद्यादान सुपात्रवित् ॥ **309** ॥

मुख्यप्रधानाचार्यत्व स्थापनैक विचक्षणः।
श्रीमद्रामानुजाचार्य सम्प्रदाय विरोधहा ॥ **310** ॥

रहस्यतत्त्व त्रितय पदवीकृति भासुरः।
रहस्यतत्त्व रत्नावल्यलङ्कृत सुहृन्मनाः ॥ **311** ॥

तत्त्वरत्नावली प्रतिपाद्य सङ्ग्रहकारकः।
तत्त्वरत्नावली गम्य ज्ञान पर्याप्ति बोधकः ॥ **312** ॥

रहस्य रत्नावल्याख्य रहस्य व्याकृतिप्रियः।
न्यास्युत्तरैनः प्रतिपदोक्त निष्कृति साधकः ॥ **313** ॥

श्रीतत्त्वनवनीत प्रीत हस्तिगिरि नायकः।
रहस्य नववीतोक्ति हृष्ट वेङ्कटनायकः ॥ **314** ॥

कालतामस भावादि निबन्धन विचारकः।
भगवत् त्रिस्थलावास क्रियाव्याकृति दक्षिणः ॥ **315** ॥

युगभेदाधीन वर्ण भगवद्देह दर्शनः।
श्रीतत्त्वमातृका हृष्ट भगवद्भक्त मानसः ॥ **316** ॥

रहस्य मातृका दत्त प्रपन्नान्वह दोषकः।
सारसङ्ग्रहकृन्न्यासि ग्राह्याग्राह्य विभागवित् ॥ **317** ॥

प्रपन्न स्वीकृतिकृत पूर्त्यपूर्ति विचारकः।
मानादि दशकालम्बि विवेकि फल बोधकः ॥ **318** ॥

मानप्रमेयविच्छिष्याचार्य कृत्यादि सारवित्।
व्यक्तीकृताखिलोत्कर्ष श्रीरहस्यशिखामणिः ॥ **319** ॥

श्रीमद्वराहावतार सर्वाधिक्याभिधायकः।
वराहाख्य पुराणातिशयवर्णन दक्षिणः ॥ **320** ॥

प्रपत्तिपर वाराह चरमश्लोक बोधकः।
यामुनोक्ति परिष्कार्यञ्जलि वैभवकारकः ॥ **321** ॥

प्रपन्नविषय श्रीमदधिकप्रीति साधकः।
श्रीमद्द्वास्यानन्य दैवत्वादन्यार्थत्व चिह्नदृक् ॥ **322** ॥

प्रधान शतक व्यक्तीकृत मुख्यार्थ सञ्चयः।
सदानुसन्धेयार्थोपकार सङ्ग्रह कारकः ॥ **323** ॥

महोपकारवित् सारसाराख्यानकृतिप्रियः।
पराङ्कुशादि निर्व्याज रक्षणोक्ति विरोधहा ॥ **324** ॥

रहस्यतत्त्व त्रितय चुलकास्वादिताश्रितः।
अभयप्रदान सार स्पष्ट रामायणान्तरः ॥ **325** ॥

श्रीशापचार रसिक वैष्णवानादरोक्तिमान्।
श्रीशापचार भक्तानादर क्षामण कालवित् ॥ **326** ॥

न्यासापेक्षित सर्वार्थ व्यञ्जकादिम काव्यवित्।
श्रीमत्कृपा परिणत सोपान पदवीप्रियः ॥ **327** ॥

अर्चिरादि महामार्ग विरोध शमनप्रियः।
माधवात्मज भूपार्थ तत्त्वसन्देश कारकः ॥ **328** ॥

रहस्य सन्देशकृति प्रीत माधवपुत्रकः।
रहस्य सन्देश विवरणाख्य कृतितोषकः ॥ **329** ॥

माधवात्मज भूपार्थ सुभाषित विधानवित्।
हंससन्देश विवृत भगवत्प्रेम तल्लजः ॥ **330** ॥

श्रीमन्मौलिक्रमाभिख्य ग्रन्थ निर्माण कोविदः।
लोकाचार्यादि सच्छिष्यार्पित शारीरभाष्यकः ॥ **331** ॥

ब्रह्मतन्त्र स्वतन्त्रादि शिष्यार्पित रहस्यकः।
कृताशीति सहस्र द्रमिडागम परीमळः ॥ **332** ॥

मुनिवाहन भोगाख्य ग्रन्थ सम्प्रीत सज्जनः।
श्रीमन्मधुरकव्युक्ति गाथा व्याख्यान दक्षिणः॥ **333** ॥

द्रमिडाम्नाय तात्पर्य रत्नावली विधायकः।
द्रमिडोपनिषत्सार प्रबन्धोज्ज्वल मानसः॥ **334** ॥

श्लोकत्रयोक्त भगवदाराधन विधिक्रमः।
नवश्लोकी सङ्गृहीत ब्रह्मसूत्र विधानकः॥ **335** ॥

प्रबन्धसार निर्माताऽऽहार नैयत्य गीतिकृत्।
मूलमन्त्रार्थ सङ्ग्राहि गाथाकृति विशारदः॥ **336** ॥

द्वयमन्त्रार्थ सङ्ग्राहि गाथाकरण दक्षिणः।
चरमश्लोक सङ्ग्राहि गाथा सङ्ग्रह कोविदः॥ **337** ॥

प्रपत्ति गर्भगीतार्थ गाथाकृति विचक्षणः।
लक्ष्मणाचार्य रोगघ्न पादतीर्थ प्रभावकः॥ **338** ॥

श्रुतप्रकाशिकारक्षा रक्षिताध्यात्म भाष्यकः।
यादवाचल भद्राशासनार्थ गतिभासुरः॥ **339** ॥

अभीतीस्तव सञ्जाताभीति रङ्गपुरी गतिः।
रङ्गप्रापित रङ्गेश गोपणार्य स्तुतिप्रियः॥ **340** ॥

रहस्यत्रय सरोज्जीवित चेतन सञ्चयः।
द्रमिडोपनिषत् दृष्ट सूरिबृन्दोपकारवित्॥ **341** ॥

मोक्षैक साधनाचार्यवत्ता साधन तत्परः।
स्वाचार्यादि शरण्यान्त भक्तिक्रम विशेषवित्॥ **342** ॥

श्रीमद्भगवदाचार्य भाव बाधक बाधकः।
शठारिनाथ योगीन्द्र गुरुशिष्यत्व साधकः॥ **343** ॥

अपरीक्ष्य रहस्यादि प्रधान बहुदोषवित्।
भक्ति प्रकाशित गुरु वंश शिष्य निबन्धनः ॥ 344 ॥

असंभाष्यादि संभाषण निष्कृति गुरुस्मृतिः।
मोक्षार्थ शास्त्रानारम्भ हेतुधिक्कृति दक्षिणः ॥ 345 ॥

आचार्य निकट प्राप्ति हेतु षड्क निरूपकः।
सारनिष्कर्ष कुशलः प्रधान प्रतितन्त्रवित् ॥ 346 ॥

ईशाधारकथा शेषित्व नियन्तृत्व बोधकः।
जीवाधेयत्व शेषत्व नियाम्यत्व निरूपकः ॥ 347 ॥

सङ्कल्पाधीन नित्याख्य वस्तु स्थिति विशेषवित्।
शेषशेष्यादि सम्बन्ध फलितार्थ विशेषवित् ॥ 348 ॥

अर्थपञ्चक तत्त्वज्ञस्तत्त्वत्रय विशेषवित्।
स्वाधीन त्रिविधाचित् चित्स्वरूपस्थिति वृत्तिदृक् ॥ 349 ॥

प्रमाणगम्य धर्मि स्वरूप रूपक धर्मवित्।
जीवलक्षण तत्त्वज्ञो बद्धलक्षण लक्षिता ॥ 350 ॥

बद्धस्थिति प्रवृत्तिज्ञो मुक्तलक्षण लक्षिता।
नित्यस्थिति प्रवृत्तिज्ञो नित्याद्यन्योन्य भेददृक् ॥ 351 ॥

नित्यमुक्तात्म कैङ्कर्य सार्वविद्य निरूपकः।
त्रिगुणस्थिति वृत्तिज्ञः ईशलक्षण लक्षिता ॥ 352 ॥

अवताररहस्यज्ञः परव्यूहादि भेददृक्।
श्री जगत्कारणत्वादि साधकानेक युक्तिमान् ॥ 353 ॥

श्रीमन्नारायण परदेवता निर्णयक्षमः।
सर्वदेवपरब्रह्माभेद खण्डनदक्षिणः ॥ 354 ॥

त्रिमूर्तिसाम्य दमनस्त्रिमूर्त्यैक्य विनाशकः।
त्रिमूर्त्युत्तीर्ण परम देवता खण्डनक्षमः॥ **355**॥

त्रिमूर्त्यन्तर्गत ब्रह्म रुद्रपारम्य खण्डनः।
ब्रह्मरुद्रादि कार्यत्व कर्मवश्यत्व साधकः॥ **356**॥

ब्रह्मरुद्रादि भगवत् पारतन्त्र्य विचारकः।
ब्रह्मादि भगवन्मायायत्तधी ह्रास वृत्तिदृक्॥ **357**॥

विष्णुदर्शित सर्गोप सर्गादि विधिशम्भुदृक्।
शुभाश्रयत्व रहित ब्रह्मरुद्रादि साधकः॥ **358**॥

ब्रह्मरुद्रादि त्रिगुण पारवश्य निरूपकः।
ब्रह्मरुद्रादि भगवदाश्रितत्व विधायकः॥ **359**॥

ब्रह्मरुद्रादि भगवद्विभूतित्व निरूपकः।
ब्रह्मरुद्रादि भगवत्प्रकारत्वाभिधायकः॥ **360**॥

ब्रह्मरुद्रादि भगवच्छरीरत्व प्रकाशकः।
ब्रह्मरुद्रादि भगवद्दासत्व स्थापनक्षमः॥ **361**॥

सात्त्विकत्वोत्पत्तिहेतु मधुसूदन दृष्टिदृक्।
रजस्तमो गुणासक्ति हेतु ब्रह्मादि दृष्टिदृक्॥ **362**॥

ब्रह्मरुद्रादि मोक्षार्थि जनोपास्यत्व बाधकः।
ब्रह्मरुद्राद्युपास्यत्व वचोनिर्वाह कारकः॥ **363**॥

ब्रह्मरुद्रादि पारम्य दृक् कर्मानर्हतादि दृक्।
ब्रह्मादि भगवत्साम्य दृक्पाषण्डित्व साधकः॥ **364**॥

विष्णुनिग्राह्य पात्रत्व रहितेतर दैवदृक्।
क्षिप्रेतर फलप्राप्ति साधनेतर देवदृक्॥ **365**॥

काम्याद्यर्थाश्रितानन्त पुरुषार्थद विष्णु धीः।
अज्ञान्यदेव यजन प्रीतविष्णु प्रकाशकः ॥ **366** ॥

अज्ञान्य देवयजन फलवैकल्य साधकः।
विष्ण्वात्मकान्य देवज्ञ कर्म पौष्कल्य साधकः ॥ **367** ॥

निष्काम विष्णुसेवानुषङ्गान्य फलसिद्धिदृक्।
पराङ्कुशादि श्रीसूक्ति साधितोत्कृष्ट माधवः ॥ **368** ॥

मुमुक्षाहेतु सारज्ञश्चाधिकारि विभागवित्।
प्रपत्त्यवान्तरपिता वेत्तोपाय विभागवित् ॥ **369** ॥

प्रपत्त्यधिक्रिया पञ्च दशनिर्णय दूर्वहः।
न्यासविद्याङ्ग पञ्चत्वोपकार व्याकृतिक्षमः ॥ **370** ॥

विश्वासोत्कर्ष विहति कारण व्याहतिक्षमः।
विश्वास गोप्तृवरण शब्दार्थत्व प्रकारवित् ॥ **371** ॥

प्रपत्ति लक्षणाभिज्ञो न्यासविद्याङ्गि वेदिता।
त्रिवर्ग मोक्षजनक न्यासविद्या विशेषवित् ॥ **372** ॥

साङ्गप्रपत्त्यनुष्ठान प्रयोगविधि साधकः।
साङ्ग प्रपत्त्यनुष्ठान सकृत्व स्थापनक्षमः ॥ **373** ॥

सहेतुकृत कृत्यत्वानुसन्धान विशारदः।
स्वस्वरूपोपाय फल निष्ठात्रय विवेकवान् ॥ **374** ॥

प्रपत्त्युत्तर कर्तव्य कृत्यनिर्णय दक्षिणः।
भगवद्दास कैङ्कर्य दास्य द्वैविध्य वेदिता ॥ **375** ॥

भगवद्दासदास्य प्राप्तानन्यत्व विरोधहा।
श्रीमद् भागवतान्योन्य दास्यसाधन तत्परः ॥ **376** ॥

प्रपन्नान्वह सङ्ग्राह्य शास्त्रीय नियमप्रियः।
भाष्यकारोक्त शास्त्रानुमतकैङ्कर्य सारवित्॥ **377**॥

उल्लङ्घिताज्ञाकरणावैष्णवत्व प्रसाधकः।
प्रपन्नाज्ञातिक्रमादि प्रायश्चित विशेषवित्॥ **378**॥

एनोनिष्कृत्युदासीन प्रपन्न लघुदण्डदृक्।
आज्ञातिलङ्घि कठिन प्रपन्न नरकाप्रियः॥ **379**॥

प्रपन्न बुद्धि पूर्वैनः प्रायश्चित्त विशेषवित्।
महापात प्रपन्न प्रसिद्ध निष्कृति वेदिता॥ **380**॥

कठिनानियतायुः प्रपन्नायुर्वृद्धि साधकः।
मोक्षार्थ न्यास संहार्य धीपूर्वोत्तर पापहा॥ **381**॥

कृतपातक नाशार्थ शरणागति वेदिता।
प्रपन्नान्वह वासार्ह स्थान व्याख्यान कोविदः॥ **382**॥

विकलाङ्ग न्यासविद्या पूर्णहेतुत्व साधकः।
देवान्तर दृढासक्त प्रपन्न नरकोक्तिमान्॥ **383**॥

विद्धदेकान्तोत्क्रमण क्रमदर्शन तोषितः।
उपायारम्भ नष्टाश्लिष्ट पूर्वोत्तर पापकृत्॥ **384**॥

इष्टावधूतान्यफल धीवैमुख्य प्रपन्नवित्।
विनष्टाश्लिष्ट पुण्याघ विधूनन पदार्थवित्॥ **385**॥

बुधपुण्याघ मित्रारि सङ्क्रान्ति व्याजबोधकः।
अर्चिरादि गतिज्ञाता सूक्ष्मदेह विसर्गवित्॥ **386**॥

दिव्यदेश प्राप्तिपूर्व क्रमदर्शन दक्षिणः।
मुक्तप्रपन्न सानन्द विभुज्ञान धुरन्धरः॥ **387**॥

मधुविद्याद्यधीकारि गत्यन्तर विशेषवित्।
मुक्त्यवस्थानन्त तारतम्यवाद विनाशकः ॥ **388** ॥

जगत्स्रष्टृ परब्रह्म तुल्यानन्त विमुक्तिदृक्।
परिपूर्ण परब्रह्मानुभव श्रुति वेदिता ॥ **389** ॥

सुनिश्चितार्थ परम ब्रह्मानुभव रीतिकः।
संसार प्रतिकूलार्थ मुक्त्यवस्थानुकूल्य दृक् ॥ **390** ॥

श्रीपतित्व परब्रह्म तुल्यानन्द विमुक्तिदृक्।
सदाचार्योपदेशैकाधिकारि ज्ञापनक्षमः ॥ **391** ॥

ससत् तर्कोपदेशाधिकारि व्याकृति कोविदः।
व्याजानपेक्ष भगवत् रक्षकत्वोक्ति वारकः ॥ **392** ॥

श्रीमत् स्वातन्त्र्य कारुण्योपयोग व्याकृतिक्षमः।
प्रपत्त्यधिक्रियावत् विशेषणत्व निरोधकः ॥ **393** ॥

मोक्षानुपाय शरण व्रज्यावाद विनाशकः।
प्रतिबन्ध निरासैकोपयुक्त व्याज वेदिता ॥ **394** ॥

देवस्वातन्त्र्य करुणा मूलव्याज निरासहा।
श्रीमत्सम्बन्ध मूल व्याजनिरास मतान्तकः ॥ **395** ॥

अव्याज भगवत्पात्रभाव मानोपपत्तिहा।
द्वयपूर्व श्रीपदोपलक्षकत्व विनाशकः ॥ **396** ॥

श्री विशेषण भावार्थोपाय द्वित्व विभञ्जकः।
निर्व्यूढ शरणव्रज्याविश्वासाभेद पूर्ववाक् ॥ **397** ॥

प्रपत्ति प्रार्थनाभेद वाङ्निर्वाह विचक्षणः।
वाक्यजन्य ज्ञानमोक्षोपायत्व मतभञ्जकः ॥ **398** ॥

स्वरक्षणार्थ व्यापार निवृत्त्युत्थिति धूर्वहः।
प्रपत्ति मोक्षोपायत्व बाधकव्रात नाशकः॥ **399** ॥

चरमश्लोक निखिल धर्मत्याग परत्वहा।
निषिद्ध वर्जनाधर्म भावत्वोक्त्यपनोदनः॥ **400** ॥

उपासन स्वरूपोपायस्वरूप विरोधहा।
वर्णाश्रमादि धर्म स्वरूपरोध विनाशकः॥ **401** ॥

ऐकान्त्यच्छेद्यन्यदेव परवर्णादि धर्महा।
भक्तिविद्या सिद्धहेतु प्ररोचन करत्वहा॥ **402** ॥

भक्तिविद्या शिष्टलोका परिग्रह निवारकः।
भरन्यासादि सकल काल धर्मत्व भञ्जनः॥ **403** ॥

न्यास प्रशंसको न्यास भक्त्याधिक्य प्रदर्शकः।
अनुकूलत्व सङ्कल्पाद्यवश्यम्भाव वेदिता॥ **404** ॥

विश्वासाङ्ग महत्वान्तराय भङ्ग विचक्षणः।
प्रपन्न भगवत्प्रेम तारतम्य विधायकः॥ **405** ॥

गुरुभक्ति लघुन्यास फलैक्योक्ति विचक्षणः।
पूर्व पूर्वाकृतांशार्थ पुनः प्रपदनोक्तिमान्॥ **406** ॥

ऐहिकार्थ न्यासकर्तृ हेतु वैकल्यसाधकः।
अभियानादि पञ्चावसर कृत्य फलोक्तिमान्॥ **407** ॥

विष्णुभक्त चतुर्थादि ब्राह्मण्य विनिवारकः।
विधुराति स्वजात्युक्त धर्मालङ्घन दृष्टिमान्॥ **408** ॥

निर्व्यूढ विधुरब्रह्ममेध संस्कृति सूक्तिकः।
यज्ञेश विधुरान्नादनोक्ति निर्वाह दक्षिणः॥ **409** ॥

अतिदेशानर्हकारि सूनुवृत्त प्रकाशकः।
भगवद्भक्त शूत्रादि धीदानादि कृतिप्रियः॥ **410** ॥

चैत्तकायिक शूद्रत्व भेदव्याख्यान दक्षिणः।
नारायणैक निष्ठेति वचनार्थ प्रदर्शकः॥ **411** ॥

निषिद्ध त्याग धर्माख्यामुख्यार्थत्व विभञ्जकः।
श्रीमत् प्रभाव सन्त्रातोपाय माहात्म्य रक्षकः॥ **412** ॥

भगवत्क्षेत्र माहात्म्य दृक् वैष्णव महत्ववित्।
सौङ्कारमूल मन्त्राष्टाक्षरत्व त्राणदीक्षितः॥ **413** ॥

द्वयमूल मनुव्याख्या रूपत्वपरिशोधकः।
मूलमन्त्राष्टाक्षर पद तत्त्वार्थ विशेषवित्॥ **414** ॥

मूलमन्त्र महावाक्य योजनाशतकारकः।
द्वयप्रभाव विज्ञाता द्वयशब्द निरुक्तिवित्॥ **415** ॥

द्वय त्रयीमूल तान्त्र मन्त्रत्व स्थापन क्षमः।
लक्ष्मी पुरुषकारत्व मानज्ञः श्रीपदार्थवित्॥ **416** ॥

द्वयमन्त्र पदप्रात प्रत्येक व्याकृति प्रियः।
श्रीशोपायान्तर स्थानापत्ति सारार्थ शोधकः॥ **417** ॥

कार्पण्य गोप्तृवरण सार्थोपायत्व याचनः।
उपाय वरणाध्यात्म निक्षेपाङ्गित्व साधकः॥ **418** ॥

द्वयोत्तरार्ध गम्यार्थ पुरुषार्थ निरूपकः।
द्वयमन्त्र महावाक्य योजनात्रय साधकः॥ **419** ॥

श्रीकृष्ण चरमश्लोकावतार व्याकृति क्षमः।
चरमश्लोक धर्मोक्ति वेद्य निर्णय कोविदः॥ **420** ॥

पुरुषोत्तम धीमोक्ष हेतुत्व मतभञ्जकः।
अवतार रहस्यज्ञानादि मोक्षकरत्वहा ॥ **421** ॥

चरमश्लोक धर्मत्यागानुवाद मतप्रियः।
प्रपत्ति सर्वधर्मत्यागाङ्गोक्ति विधिभञ्जकः ॥ **422** ॥

क्षेत्रज्ञोपासनोपाय नित्याशक्तत्व भञ्जकः।
एकवाक्य विधित्वानुवादत्वानुपपत्ति वित् ॥ **423** ॥

गुरूपाय लघूपाय गीः प्ररोचकता प्रियः।
भक्तिविद्या मन्दधीकाधिकारित्व मतान्तकः ॥ **424** ॥

उपासना मन्दविश्वासाधिकारित्व नाशकः।
उपासना लोकसङ्ग्रहार्थित्व मतमारकः ॥ **425** ॥

प्रपत्तिरूप सकल धर्मत्याग मतान्तकः।
प्रपत्त्यनुष्ठानकाल सर्वधर्म विमुक्तिहा ॥ **426** ॥

प्रदक्षिण प्रणामाद्यनुज्ञा कैङ्कर्य हेतुदृक्।
अवज्ञाकृत भक्तादि जन्मचिन्तादि दोषदृक् ॥ **427** ॥

शास्त्रव्यवस्था सिद्ध्यर्थ भक्तजन्मादि चिन्तकः।
सारकल्क स्वरूप श्रीमत्कैङ्कर्य विभागदृक् ॥ **428** ॥

सम्बन्धधी मुखानेक मोक्षहेतु मतान्तकः।
चरमश्लोक निखिल धर्मत्यागि षडर्थवित् ॥ **429** ॥

चरमश्लोकैक शब्द षडर्थोक्ति विचक्षणः।
परतन्त्र स्वभावात्म विध्यनर्हत्व भञ्जकः ॥ **430** ॥

परतन्त्रात्म कर्तृत्व स्वरूप विशदोक्तिमान्।
श्रीमत्कर्तृ प्रेरकानुमन्तृ कारयितृत्व वित् ॥ **431** ॥

क्रियमाणाघ विध्वंसि प्रपत्ति प्रतिपादकः।
ब्रह्म विद्यारम्भ नष्टाश्लिष्ट कर्म स्वरूपवित्॥ **432**॥

प्रियाप्रियोपसङ्क्रान्त विद्वत्पुण्याघ वेदिता।
प्राप्त्यन्तराय वित् साध्योपाय रोधि विशेषवित्॥ **433**॥

प्रतिकूलानुभूत्यादि हेतु पापस्वरूपवित्।
गुणाष्टकाविर्भावोक्ति वेद्यार्थ परिशोधकः॥ **434**॥

कैवल्याख्य पुमर्थ स्वरूप नित्यत्व बाधकः।
मा शुचः शब्द निर्णुन्न शोकानेक विधत्ववित्॥ **435**॥

आचार्य कृत्यविच्छिष्य कृत्यवेदन दीक्षितः।
यतीन्द्र माहानसिक संप्रदाय सुधाप्रदः॥ **436**॥

विरोध परिहार श्री सारसाराक्षि युग्मदः।
सौम्य कार्तिक राकाश्री पर्यङ्कारोहण प्रियः॥ **437**॥

अत्रार्चया जगत्सर्वं पालयन् जयति ह्यसौ॥ **438**॥

इदं गुरोर्दिव्यसहस्रनाम
    स्तोत्रं महार्थं सरसार्थबोधम्।
पठन्ति ये सर्व समीहितार्थ
    सिद्धिं लभन्तेऽत्र परत्र चापि॥ **439**॥

फलानपेक्षोपि गुरोः प्रसादात्
    सिद्धिं समाप्नोत्यनुषङ्गसिद्धाम्।
श्रमापनोदाय कृतावगाहं
    गङ्गा पवित्रीकुरुते हि जन्तुम्॥ **440**॥

गोपालदासस्य गुरूत्तमाङ्घ्रि
    भक्तिस्रवन्ती हृदयाब्ज कोशात्।
निर्गत्य तन्नामसहस्ररूपा
    तद्ध्यायिनः सर्वजनान् पुनाति ॥ **441** ॥

॥ इति श्री देशिक दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥